चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक सवेरा.....

दिनांक 23.12.2020...पृष्ठ संख्या.....7.....कॉलम....3-6.....

हकृवि वैज्ञानिकों ने विकसित की दाना मटर की रोग प्रतिरोधी किस्म

● 40 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक आंकी गई अधिकतम पैदावार

हिसार, 22 दिसंबर (सुरेंद्र सोढी) :चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष दाना मटर की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एच.एफ.पी.-1428 विकिसत कर एक ओर उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। दाना मटर की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों को इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि इससे पूर्व विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा दाना मटर की अपर्णा, जयंती, उत्तरा, एच.एफ.पी.-9426, हरियल, एच.एफ.पी.-529 व एच.एफ.पी.-715 किस्में विकसित की जा चुकी हैं। यह किस्म सफ़ेद चूर्णी, एस्कोकायटा ब्लाइट व जड़ गलन जैसे रोगों की प्रतिरोधी है एवं इसमें रतुआ का प्रकोप भी कम होता है। इसके अतिरिक्त दाना मटर की इस किस्म में एफिड जैसे रस चूसक कीट एवं फली छेदक कीटों का प्रभाव भी पहले वाली किस्मों की तुलना में बहुत कम होगा।

मटर की किस्म का फाइल फोटो व विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

दाना मटर की एच.एफ.पी.-1428 किस्म विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के कृषि वैज्ञानिक डॉ. राजेश यादव के नेतृत्व में, डॉ. रविका, डॉ. नरेश कुमार और डॉ. ए.के. छाबड़ा द्वारा विकसित की गई है। इस उपलब्धि को प्राप्त करने में डॉ. रामधन जाट, डॉ. तरुण वर्मा एवं डॉ. प्रोमिल कपूर का भी विशेष योगदान रहा है।

कम अवधि में पककर होती है तैयार

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि रबी में सिंचित क्षेत्रों में काश्त की जाने वाली दाना मटर की इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी फसल कम अवधि (लगभग 123 दिन) में पककर तैयार हो जाती है। यह हरे पत्रक एवं सफ़ेद फूलों वाली बौनी किस्म है व इसके दाने पीले-सफ़ेद (क्रीम) रंग के मध्यम आकार व थोड़ी झुर्रियों एवं हल्के बेलनाकार होते हैं। इसके पौधे सीधे बढ़ने वाले होते हैं इसलिए फलियां लगने के बाद गिरते नहीं हैं, जिससे इसकी उत्पादकता नहीं घटती एवं कटाई भी आसान हो जाती है। इस किस्म की एक और खाशियत यह है की इसकी जड़ों में नत्रजन स्थापित करने वाली गाँठें और नाइट्रोजीनेस गतिविधि बहुत अधिक होती है जिसके कारण इसकी पर्यावरण से नत्रजन स्थापित करने की क्षमता अत्यधिक है जोकि इसके उपरांत ली जाने वाली फसलों के लिए भी लाभदायक है। इसकी औसत पैदावार 26-28 क्विंटल प्रति हेक्टेयर एवं अधिकतम पैदावार 40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक आंकी गई है।

उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के लिए विकसित

रबी में बोई जाने वाली दाना मटर की एच.एफ.पी.-1428 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के सिंचित क्षेत्रों में काश्त के लिए अनुमोदित किया गया है जिसमे जम्मू और कश्मीर के मैदानी भाग, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड राज्य शामिल हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक भास्कर.....

दिनांक 23.12.2020...पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम...3-5.....

एचएयू के वैज्ञानिकों ने विकसित की दाना मटर की रोग प्रतिरोधी किस्म

एचएफपी-1428 से 40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक मिलेगी दाना मटर की अधिकतम पैदावार

भास्कर न्यूज. हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष दाना मटर की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एच.एफ.पी. - 1428 विकसित कर एक ओर उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम कर दी है। दाना मटर की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी किया गया है।

कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों को इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि इससे पूर्व विवि के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा दाना मटर की अपर्णा, जयंती, उत्तरा, एच.एफ.पी.-9426, हरियल, एच.एफ.पी.-529 व एच.एफ. पी.-715 किस्में विकसित की जा चुकी हैं।

एचएयू के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई मत्र की फसल।

▪ उत्तर-पश्चिम भारत के मैदानी इलाकों के लिए की गई है विकसितः रबी में बोई जाने वाली दाना मटर की एच.एफ. पी.-1428 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के सिंचित क्षेत्रों में काश्त के लिए अनुमोदित किया गया है जिसमें जम्मू और कश्मीर के मैदानी भाग, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड राज्य शामिल हैं। विवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि रबी में सिंचित क्षेत्रों में काश्त की जाने वाली दाना मटर की इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी फसल कम अवधि (लगभग 123 दिन) में पककर तैयार हो जाती है। यह हरे पत्रक एवं सफेद फूलों वाली बौनी किस्म है व इसके दाने पीले-सफेद (क्रीम) रंग के मध्यम आकार व थोड़ी झुर्रियों एवं हल्के बेलनाकार होते हैं। इसके पौधे सीधे बढ़ने वाले होते हैं इसलिए फलियां लगने के बाद गिरते नहीं हैं, जिससे इसकी उत्पादकता नहीं घटती एवं कटाई भी आसान हो जाती है।

इस किस्म की एक और खासियत यह है की इसकी जड़ों में नत्रजन स्थापित करने वाली गांठें और नाइट्रोजीनेस गतिविधि बहुत अधिक होती है जिसके कारण इसकी पर्यावरण से नत्रजन स्थापित करने की क्षमता अत्यधिक है जोकि इसके बाद ली जाने वाली फसलों के लिए लाभदायक है। यह किस्म सफेद चूर्णी, एस्कोकायटा ब्लाइट व जड़ गलन जैसे रोगों की प्रतिरोधी है एवं इसमें रतुआ का प्रकोप भी कम होता है। इसके अतिरिक्त दाना मटर की इस किस्म में एफिड जैसे रस चूसक कीट एवं फली छेदक कीटों का प्रभाव भी पहले वाली किस्मों की तुलना में बहुत कम होगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब केसरी.....

दिनांक 23.12.2020 पृष्ठ संख्या.....7.....कॉलम.....1-5.....

'हकृवि वैज्ञानिकों ने विकसित की दाना मटर की रोग प्रतिरोधी किस्म एच.एफ.पी.-1428'

हिसार, 22 दिसम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष दाना मटर की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एच.एफ.पी.-1428 विकसित कर एक और उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। दाना मटर की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों को इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि इससे पूर्व विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा दाना मटर की अपर्णा, जयंती, उत्तरा, एच.एफ.पी.-9426, हरियल, एच.एफ.पी.-529 व एच.एफ.पी.-715 किस्में विकसित की जा चुकी हैं।

मटर की किस्म का फाइल फोटो।

उत्तर-पश्चिम भारत के मैदानी इलाकों के लिए की है विकसित

रबी में बोई जाने वाली दाना मटर की एच.एफ.पी.-1428 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के सिंचित क्षेत्रों में काश्त के लिए अनुमोदित किया गया है, जिसमे जम्मू और कश्मीर के मैदानी भाग, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड राज्य शामिल हैं।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

दाना मटर की एच.एफ.पी.-1428 किस्म विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के कृषि वैज्ञानिक डा. राजेश यादव के नेतृत्व में, डा. रविका, डा. नरेश कुमार और डा. ए.के. छाबड़ा द्वारा विकसित की गई है। इस उपलब्धि को प्राप्त करने में डा. रामधन, डा. तरुण वर्मा एवं डा. प्रोमिल कपूर का भी विशेष योगदान रहा है।

कम अवधि में पककर तैयार होती है किस्म

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डा. एस.के. सहरावत ने बताया कि रबी में सिंचित क्षेत्रों में काश्त की जाने वाली दाना मटर की इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी फसल कम अवधि (लगभग 123 दिन) में पककर तैयार हो जाती है। यह हरे पत्रक एवं सफेद फूलों वाली बौनी किस्म है व इसके दाने पीले-सफेद (क्रीम) रंग के मध्यम आकार व थोड़ी झुर्रियों एवं हल्के बेलनाकार होते हैं। इसके पौधे सीधे बढ़ने वाले होते हैं, इसलिए फलियां लगने के बाद गिरते नहीं हैं, जिससे इसकी उत्पादकता नहीं घटती एवं कटाई भी आसान हो जाती है। इस किस्म की एक और खासियत यह है की इसकी जड़ों में नाइट्रोजन स्थापित करने वाली गांठें और नाइट्रोजीनेस गतिविधि बहुत अधिक होती है जिसके कारण इसकी पर्यावरण से नाइट्रोजन स्थापित करने की क्षमता अत्यधिक है जोकि इसके उपरांत ली जाने वाली फसलों के लिए भी लाभदायक है। इसकी औसत पैदावार 26-28 से 40 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक आंकी गई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम .... हरि: भूमि ....

दिनांक 23.12.2022 पृष्ठ संख्या 2 कॉलम 2-8

उपलब्धि | दाना मटर की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग ने विकसित किया

हिसार कृवि वैज्ञानिकों ने विकसित की दाना मटर की रोग प्रतिरोधी किस्म, प्रति हेक्टेयर होगी 40 क्विंटल की पैदावार

कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों की इस उपलब्धि पर हर्ष जताया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष दाना मटर की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एचएफपी-1428 विकसित कर एक और उपलब्धि हासिल की है। दाना मटर की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग ने विकसित किया गया है। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति ने नई दिल्ली में आयोजित बैठक में नई किस्म को अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों को इस उपलब्धि पर हर्ष जताया है। इससे पहले कृषि वैज्ञानिकों ने दाना मटर की अपर्णा, जयंती, उत्तरा, एचएफपी-9426, हरियल, एचएफपी-529 व एचएफपी-715 किस्में विकसित की हैं।

नई किस्म उत्तर-पश्चिम भारत के मैदानी इलाकों के लिए मुफीद

रबी में बोई जाने वाली दाना मटर की एच.एफ.पी.-1428 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के सिंचित क्षेत्रों में काश्त के लिए अनुमोदित किया गया है जिसमे जम्मू कश्मीर के मैदानी भाग, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखंड राज्य शामिल है। हकृवि अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि रबी में सिंचित क्षेत्रों मे काश्त की जाने वाली दाना मटर की इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी फसल कम अवधि लगभग 123 दिन में पककर तैयार हो जाती है। यह हरे पत्रक एवं सफेद फूलों वाली बौनी किस्म है व इसके दाने क्रीम रंग के मध्यम आकार व थोड़ी झुर्रियों एवं हल्के बेलनाकार होते है। इसके पौधे सीधे बढ़ने वाले होते हैं इसलिए फलियां लगने के बाद गिरते नहीं है, जिससे इसकी उत्पादकता नहीं घटती एवं कटाई भी आसान हो जाती है। इस किस्म की एक और खासियत यह है की इसकी जड़ों मे नत्रजन स्थापित करने वाली गांठें और नाइट्रोजीनेस गतिविधि ज्यादा होती है जिससे इसकी पर्यावरण से नत्रजन स्थापित करने की क्षमता अत्यधिक है जोकि इसके उपरांत ली जाने वाली फसलों के लिए भी लाभदायक है। इसकी औसत पैदावार 26 से 28 क्विंटल प्रति हेक्टेयर एवं अधिकतम पैदावार 40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक आंकी गई है।

मेहनत लाई रंग

दाना मटर की एचएफपी-1428 किस्म विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के कृषि वैज्ञानिक डॉ. राजेश यादव के नेतृत्व में, डॉ. रविका, डॉ. नरेश कुमार तथा डॉ. एके छाबड़ा ने विकसित की है। इस उपलब्धि में डॉ. रामधन जाट, डॉ. तरुण वर्मा एवं डॉ. प्रोमिल कपूर का भी विशेष योगदान रहा है।

रोगरोधक क्षमता अधिक

यह किस्म सफेद चूर्णी, एस्कोकायटा ब्लाइट तथा जड़ गलन जैसे रोगों की प्रतिरोधी है एवं इसमें रतुआ का प्रकोप भी कम होता है। इसके अतिरिक्त दाना मटर की इस किस्म में एफिड जैसे रस चूसक कीट एवं फली छेदक कीटों का प्रभाव भी पहले वाली किस्मों की तुलना में कम होगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....अमर उजाला.....

दिनांक 23.12.2022...पृष्ठ संख्या.....1.....कॉलम.....1:3.....

हकृवि के वैज्ञानिकों ने विकसित की मटर की रोग प्रतिरोधी किस्म एचएफपी-1428

अमर उजाला ब्यूरो

40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक आंकी गई अधिकतम पैदावार

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) के कृषि वैज्ञानिकों ने दाना मटर की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एचएफपी-1428 विकिसत की है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने बताया कि इससे पूर्व विवि द्वारा दाना मटर की अपर्णा, जयंती, उत्तरा, एचएफपी-9426, हरियल, एचएफपी-529 व एचएफपी-715 किस्में विकसित की जा चुकी हैं।

दाना मटर की नई किस्म।

उत्तर-पश्चिम भारत के मैदानी इलाकों के लिए की विकसित : रबी में बोई जाने वाली दाना मटर की एचएफपी-1428 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के सिंचित क्षेत्रों में काश्त के लिए अनुमोदित किया गया है, जिसमें जम्मू और कश्मीर के मैदानी भाग, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड राज्य शामिल हैं।

कम अवधि में पककर तैयार होती है : विवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी फसल कम अवधि (लगभग 123 दिन) में पककर तैयार हो जाती है। इसकी औसत पैदावार 26-28 क्विंटल प्रति हेक्टेयर एवं अधिकतम पैदावार 40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक आंकी गई है।

रोगरोधक क्षमता अधिक : यह किस्म सफेद चूर्णी, एस्कोकायटा ब्लाइट व जड़ गलन जैसे रोगों की प्रतिरोधी है एवं इसमें रतुआ का प्रकोप भी कम होता है। इस किस्म में एफिड जैसे रस चूसक कीट एवं फली छेदक कीटों का प्रभाव भी पहले वाली किस्मों की तुलना में बहुत कम होगा।

इन वैज्ञानिकों का योगदान : यह किस्म कृषि वैज्ञानिक डॉ. राजेश यादव के नेतृत्व में, डॉ. रविका, डॉ. नरेश कुमार और डॉ. एके छाबड़ा द्वारा विकसित की है। इसमें डॉ. रामधन, डॉ. तरुण वर्मा एवं डॉ. प्रोमिल कपूर का भी विशेष योगदान रहा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक जागरण.....

दिनांक 23.12.2020.....पृष्ठ संख्या.....7.....कॉलम.....1-2.....

मटर की नयी किस्म से किसान होंगे मालामाल

हकृवि के वैज्ञानिकों द्वारा तैयार एचएफसी 1428 मटर का पौधा

हिसार (निस) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष दाना मटर की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एचएफपी 1428 विकिसत कर एक ओर उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। जिससे उत्तर-पश्चिमी भारत कि सब्जी उत्पादकों को मालामाल करेगी, जिसका उत्पादन प्रति हेक्टेयर 40 क्विंटल आंका गया है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम....दैनिक जागरण....

दिनांक 23.12.2020 पृष्ठ संख्या 3 कॉलम 1-2

रोग प्रतिरोध क्षमता से लैस मटर की नई किस्म की गई विकसित

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञानियों ने इस वर्ष दाना मटर की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एचएफपी-1428 विकसत कर एक और उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। दाना मटर की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति द्वारा जारी भी कर दिया गया है। कुलपति प्रो. समर सिंह ने विज्ञानियों को बधाई देते हुए बताया कि इससे पूर्व दाना मटर की अपर्णा, जयंती, उत्तरा, एचएफपी-9426, हरियल, एचएफपी-529 व एचएफपी-715 किस्में भी एचएयू ने ही विकसित की हैं।

रबी में बोई जाने वाली दाना मटर की एचएफपी-1428 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के सिंचित क्षेत्रों में काश्त के लिए अनुमोदित किया गया है। जिसमे जम्मू और कश्मीर के मैदानी भाग, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड राज्य शामिल हैं।

हरियाणा कृषि विवि के विज्ञानियों ने विकसित की किस्म, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली सहित अन्य राज्यों में देगी अच्छी पैदावार

कम समय में तैयार होगी

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डा. एसके सहरावत ने बताया कि रबी में सिंचित क्षेत्रों में काश्त की जाने वाली दाना मटर की इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी फसल कम अवधि (लगभग 123 दिन) में पककर तैयार हो जाती है। यह हरे पत्रक एवं सफेद फूलों वाली बौनी किस्म है व इसके दाने पीले-सफेद (क्रीम) रंग के मध्यम आकार व थोड़ी झुर्रियों एवं हल्के बेलनाकार होते हैं। इसके पौधे सीधे बढ़ने वाले होते हैं इसलिए फलियां लगने के बाद गिरते नहीं हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक भास्कर.....

दिनांक 23.12.2020 पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....7.....

पराली से खाद तैयार कर किसान कर सकते हैं मशरूम का उत्पादन

हिसार| किसान खेती के साथ कम लागत से मशरूम का उत्पादन कर सकते हैं और अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। इसके लिए उन्हें मशरूम उत्पादन से संबंधित तकनीकी ज्ञान हासिल करना जरूरी है। यह सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सदलपुर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र में आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान वैज्ञानिकों ने किसानों को दी।

पांच दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर प्रशिक्षण में आसपास के विभिन्न गांवों के किसानों ने हिस्सा लिया। कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर के को-ऑर्डिनेटर डॉ. नरेंद्र कुमार ने प्रतिभागियों को बताया कि मशरूम की खेती फसल अवशेषों पर की जाती है जिससे उनका पुनः चक्र होकर उच्च कोटि के पोषक तत्वों एवं औषधीय गुणों से भरपूर मशरूम प्राप्त होता है। भारत में श्वेत बटन मशरूम (खुम्ब) की एगेरिकस बाइसपोरस प्रजाति की खेती बड़े पैमाने पर की जा रही है। उत्पादन की दृष्टि से श्वेत बटन मशरूम (खुम्ब) का विश्व में प्रथम स्थान है। इंजीनियर अजीत सांगवान ने खुम्ब में होने वाले कीड़े-मकोड़ों व बीमारियों का प्रबंधन, मशरूम का मूल्य संवर्धन व मार्केटिंग इत्यादि के बारे में जानकारी दी। डॉ. राकेश चुघ ने मशरूम की खाद बनाने व बिजाई के तरीकों के साथ-साथ पराली से खाद तैयार कर उसमें विभिन्न प्रकार के मशरूम उत्पादन की जानकारी दी। मौके पर एचएयू हिसार के विभिन्न वैज्ञानिक डॉ. कुशल राज, डॉ. सतीश मेहता, डॉ. राकेश चुघ, डॉ. राकेश सांगवान, डॉ. वीणा सांगवान, डॉ. राकेश पूनियां, डॉ. अनिल सैनी, डॉ. जगदीप मेहता व डॉ. मंजीत के अलावा जिला बागवानी अधिकारी डॉ. सुरेंद्र सिहाग मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....नित्य शक्ति टाइम्स.....

दिनांक 22.12.2020 पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

नित्य शक्ति टाइम्स (हिसार) मंगलवार, 22 दिसम्बर, 2020

हकृवि वैज्ञानिकों ने विकसित की दाना मटर की रोग प्रतिरोधी किस्म एचएफपी-1428

40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक आंकी गई अधिकतम पैदावार

हिसार, (नित्य शक्ति टाइम्स) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष दाना मटर की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एच.एफ.पी.-1428 विकसित कर एक ओर उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। दाना मटर की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों को इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि इससे पूर्व विश्वविद्यालय के कृषि

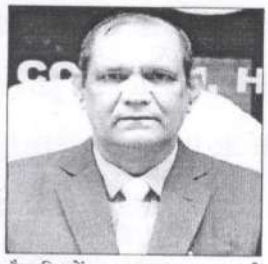

वैज्ञानिकों द्वारा दाना मटर की अपर्णा, जयंती, उत्तरा, एच.एफ.पी.-9426, हरियल, एच.एफ.पी.-529 व एच.एफ.पी.-715 किस्में विकसित की जा चुकी हैं।

उत्तर-पश्चिम भारत के मैदानी इलाकों के लिए की गई है विकसित-रबी में बोई जाने वाली दाना मटर की एच.एफ.पी.-1428 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के सिंचित क्षेत्रों में काश्त के लिए अनुमोदित किया गया है जिसमे जम्मू और कश्मीर के मैदानी भाग, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड राज्य शामिल हैं।

कम अवधि में पककर तैयार होती है किस्म-विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि रबी में सिंचित क्षेत्रों में काश्त की जाने वाली दाना मटर की इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी फसल कम अवधि (लगभग 123 दिन) में पककर तैयार हो जाती है। यह हरे पत्रक एवं सफ़ेद फूलों वाली बौनी किस्म है व इसके दाने पीले-सफेद (क्रीम) रंग के मध्यम आकार व थोड़ी झुर्रियों एवं हल्के बेलनाकार होते हैं। इसके पौधे सीधे बढ़ने वाले होते हैं इसलिए फलियां लगने के बाद गिरते नहीं हैं, जिससे इसकी उत्पादकता नहीं घटती एवं कटाई भी आसान हो जाती है। इस किस्म की एक और खाशियत यह है की इसकी जड़ों में नत्रजन स्थापित करने वाली गांठें और नाइट्रोजीनेस गतिविधि बहुत अधिक होती है जिसके कारण इसकी पर्यावरण से नत्रजन स्थापित करने की क्षमता अत्यधिक है जोकि इसके उपरांत ली जाने वाली फसलों के लिए भी लाभदायक है। इसकी औसत पैदावार 26-28 क्विंटल प्रति हेक्टेयर एवं अधिकतम पैदावार 40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक आंकी गई है।

रोगरोधक क्षमता अधिक-यह किस्म सफ़ेद चूर्णी, एस्कोकायटा ब्लाइट व जड़ गलन जैसे रोगों की प्रतिरोधी है एवं इसमें रतुआ का प्रकोप भी कम होता है। इसके अतिरिक्त दाना मटर की इस किस्म में एफिड जैसे रस चूसक कीट एवं फली छेदक कीटों का प्रभाव भी पहले वाली किस्मों की तुलना में बहुत कम होगा।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग-दाना मटर की एच.एफ.पी.-1428 किस्म विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के कृषि वैज्ञानिक डॉ. राजेश यादव के नेतृत्व में, डॉ. रविका, डॉ. नरेश कुमार और डॉ. ए.के. छाबड़ा द्वारा विकसित की गई है। इस उपलब्धि को प्राप्त करने में डॉ. रामधन जाट, डॉ. तरुण वर्मा एवं डॉ. प्रोमिल कपूर का भी विशेष योगदान रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम............अजीत समाचार............

दिनांक 23.12.2020 पृष्ठ संख्या....—....कॉलम....—....

हकृवि वैज्ञानिकों ने विकसित की दाना मटर की रोग प्रतिरोधी किस्म एचएएफपी-1428

40 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक आंकी गई अधिकतम पैदावार

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व मटर की किस्म का फोटो। (छाया : सोनी)

हिसार/मंगाली नलवा, 22 दिसम्बर (राज पराशर/देवानन्द सोनी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष दाना मटर की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एच.एफ.पी.-1428 विकसित कर एक और उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। दाना मटर की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों को इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि इससे पूर्व विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा दाना मटर की अपर्णा, जयंती, उत्तरा, एच.एफ.पी.-9426, हरियल, एच.एफ.पी.-529 व एच.एफ.पी.-715 किस्में विकसित की जा चुकी हैं।

उत्तर-पश्चिम भारत के मैदानी इलाकों के लिए की गई है विकसित : रबी में बोई जाने वाली दाना मटर की एच.एफ.पी.-1428 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के सिंचित क्षेत्रों में काश्त के लिए अनुमोदित किया गया है जिसमें जम्मू और कश्मीर के मैदानी भाग, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड राज्य शामिल हैं।

कम अवधि में पककर तैयार होती है किस्म : विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि रबी में सिंचित क्षेत्रों में काश्त की जाने वाली दाना मटर की इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी फसल कम अवधि (लगभग 123 दिन) में पककर तैयार हो जाती है। यह हरे पत्रक एवं सफेद फूलों वाली बौनी किस्म है व इसके दाने पीले-सफेद (क्रीम) रंग के मध्यम आकार व थोड़ी झुर्रियों एवं हल्के बेलनाकार होते हैं। इसके पौधे सीधे बढ़ने वाले होते हैं इसलिए फलियां लगने के बाद गिरते नहीं हैं, जिससे इसकी उत्पादकता नहीं घटती एवं कटाई भी आसान हो जाती है। इस किस्म की एक और खासियत यह है की इसकी जड़ों में नत्रजन स्थापित करने वाली गांठें और नाइट्रोजीनेस गतिविधि बहुत अधिक होती है, जिसके कारण इसकी पर्यावरण से नत्रजन स्थापित करने की क्षमता अत्यधिक है जोकि इसके उपरांत ली जाने वाली फसलों के लिए भी लाभदायक है। इसकी औसत पैदावार 26-28 क्विंटल प्रति हैक्टेयर एवं अधिकतम पैदावार 40 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक आंकी गई है। इस उपलब्धि को प्राप्त करने में डॉ. रामधन जाट, डॉ. तरुण वर्मा एवं डॉ. प्रोमिल कपूर का भी विशेष योगदान रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....सच कहूं.....

दिनांक 23.12.2020 पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक आंकी गई अधिकतम पैदावार, रोगरोधक क्षमता भी अधिक

हकृवि वैज्ञानिकों ने विकसित की मटर की किस्म एचएफपी-1428

सच कहूं/संदीप सिंहमार।
हिसार।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष दाना मटर की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एच.एफ.पी.-1428 विकसित कर एक और उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। दाना मटर की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित

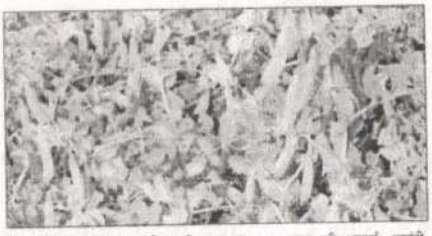

बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सम्र सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों को इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि इससे पूर्व विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा दाना मटर की अपर्णा, जयंती, उत्तरा, एच.एफ.पी.-9426, हरियाणा, एच.एफ.पी.-529 व एच.एफ.पी.-715 किस्में विकसित की जा चुकी हैं।

उत्तर-पश्चिम भारत के मैदानी इलाकों के लिए की गई है विकसित

रबी में बोई जाने वाली दाना मटर की एच.एफ.पी.-1428 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के सिंचित क्षेत्रों में काश्त के लिए अनुमोदित किया गया है जिसमें जम्मू और कश्मीर के मैदानी भाग, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड राज्य शामिल हैं।

कम अवधि में पककर तैयार होती है किस्म

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि रबी में सिंचित क्षेत्रों में काश्त की जाने वाली दाना मटर की इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी फसल कम अवधि (लगभग 123 दिन) में पककर तैयार हो जाती है। यह हरे पत्रक एवं सफेद फूलों वाली बौनी किस्म है व इसके दाने पीले-सफेद (क्रीम) रंग के मध्यम आकार व थोड़ी झुर्रियों एवं लम्बे वेलनाकार होते हैं। इसके पौधे सीधे बढ़ने वाले होते हैं इसलिए फलियां लगने के बाद गिरते नहीं हैं, जिससे इसकी उत्पादकता नहीं घटती एवं कटाई भी आसान हो जाती है। इस किस्म की एक और खासियत यह है की इसकी जड़ों में नत्रजन स्थापित करने वाली गांठें और नाइट्रोजीनेस गतिविधि बहुत अधिक होती है जिसके कारण इसकी पर्यावरण से नत्रजन स्थापित करने की क्षमता अत्यधिक है जो कि इसके उपरांत ली जाने वाली फसलों के लिए भी लाभदायक है। इसकी औसत पैदावार 26-28 क्विंटल प्रति हेक्टेयर एवं अधिकतम पैदावार 40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक आंकी गई है।

रोगरोधक क्षमता अधिक

यह किस्म सफेद चूर्णी, एस्कोकायटा ब्लाइट व जड़ गलन जैसे रोगों की प्रतिरोधी है एवं इसमें रतुआ का प्रकोप भी कम होता है। इसके अतिरिक्त दाना मटर की इस किस्म में एफिड जैसे रस चूसक कीट एवं फली छेदक कीटों का प्रभाव भी पहले वाली किस्मों की तुलना में बहुत कम होगा।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

दाना मटर की एच.एफ.पी.-1428 किस्म विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के कृषि वैज्ञानिक डॉ. राजेश यादव के नेतृत्व में, डॉ. रविन्द्र, डॉ. नरेश कुमार और डॉ. ए.के. छाबड़ा द्वारा विकसित की गई है। इस उपलब्धि को प्राप्त करने में डॉ. रामधन जाट, डॉ. तरुण वर्मा एवं डॉ. प्रोमिल कपूर का भी विशेष योगदान रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....उत्तम हिन्दू.....

दिनांक .....पृष्ठ संख्या.....कॉलम.....

हकृवि वैज्ञानिकों ने विकसित की मटर की रोग प्रतिरोधी किस्म

हिसार/प्रवीन कुमार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष दाना मटर की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एच.एफ.पी.-1428 विकसित कर एक और उपलब्धि विश्वविद्यालय के नाम की है। दाना मटर की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति, द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों को इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि इससे पूर्व विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा दाना मटर की अपर्णा, जयंती, उत्तरा, एच.एफ.पी.-9426, हरियल, एच.एफ.पी.-529 व एच.एफ.पी.-715 किस्में विकसित की जा चुकी हैं। दाना मटर की एच.एफ.पी.-1428 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के सिंचित क्षेत्रों में काश्त के लिए अनुमोदित किया गया है जिसमे जम्मू और कश्मीर के मैदानी भाग, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड राज्य शामिल हैं। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि रबी में सिंचित क्षेत्रों में काश्त की जाने वाली मटर की इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी फसल कम अवधि (लगभग 123 दिन) में पककर तैयार हो जाती है। यह हरे पत्रक एवं सफ़ेद फूलों वाली बौनी किस्म है व इसके दाने पीले-सफेद (क्रीम) रंग के मध्यम आकार व थोड़ी झुर्रियों एवं हल्के बेलनाकार होते हैं। इसके पौधे सीधे बढ़ने वाले होते हैं इसलिए फलियां लगने के बाद गिरते नहीं हैं, जिससे इसकी उत्पादकता नहीं घटती एवं कटाई भी आसान हो जाती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम....सिटी पल्स....

दिनांक 22.12.2022 पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने विकसित की दाना मटर की रोग प्रतिरोधी किस्म एचएफपी-1428

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष दाना मटर की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एच.एफ.पी.-1428 विकसित कर एक और उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। दाना मटर की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है।

दाना मटर की एच.एफ.पी.-1428 किस्म विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के कृषि वैज्ञानिक डॉ. राजेश यादव के नेतृत्व में, डॉ. रविका, डॉ. नरेश कुमार और डॉ. ए.के. छाबड़ा द्वारा विकसित की गई है। इस उपलब्धि को प्राप्त करने में डॉ. रामधन जाट, डॉ. तरुण वर्मा एवं डॉ. प्रोमिल कपूर का भी विशेष योगदान रहा है।

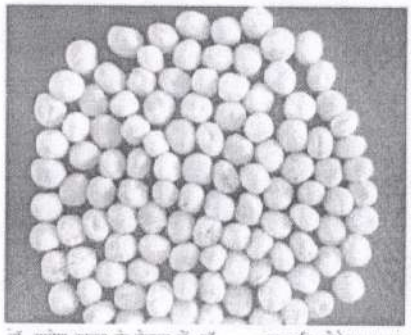

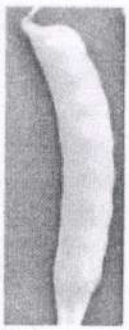

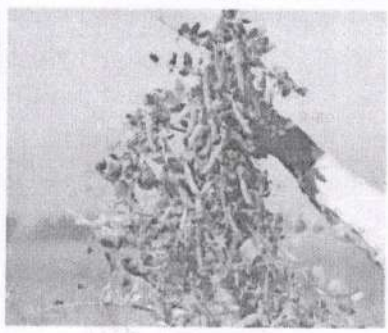

कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि इससे पूर्व विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा दाना मटर की अपर्णा, जयंती, उत्तरा, एच.एफ.पी.-9426, हरियल, एच.एफ.पी.-529 व एच.एफ.पी.-715 किस्में विकसित की जा चुकी हैं।

उत्तर-पश्चिम भारत के मैदानी इलाकों के लिए की गई है विकसित

रबी में बोई जाने वाली दाना मटर की एच.एफ.पी.-1428 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के सिंचित क्षेत्रों में काश्त के लिए अनुमोदित किया गया है जिसमें जम्मू और कश्मीर के मैदानी भाग, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड राज्य शामिल हैं।

कम अवधि में पककर तैयार होती है किस्म

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि रबी में सिंचित क्षेत्रों में काश्त की जाने वाली दाना मटर की इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी फसल कम अवधि (लगभग 123 दिन) में पककर तैयार हो जाती है। यह हरे पत्रक एवं सफेद फूलों वाली बौनी किस्म है व इसके दाने पीले-सफेद (क्रीम) रंग के मध्यम आकार व थोड़ी झुर्रियों एवं हल्के बेलनाकार होते हैं। इसके पौधे सीधे बढ़ने वाले होते हैं इसलिए फलियां लगने के बाद गिरते नहीं हैं, जिससे इसकी उत्पादकता नहीं घटती एवं कटाई भी आसान हो जाती है। इसकी औसत पैदावार 26-28 क्विंटल प्रति हेक्टेयर एवं अधिकतम पैदावार 40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक आंकी गई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....समस्त हरियाणा.....

दिनांक 22.12.2020.....पृष्ठ संख्या.....कॉलम.....

हकृवि ने विकसित की दाना मटर की एचएफपी-1428 किस्म

40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक आंकी गई अधिकतम पैदावार

समस्त हरियाणा ब्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष दाना मटर की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एच.एफ.पी.-1428 विकसित कर एक ओर

उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। दाना मटर की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा

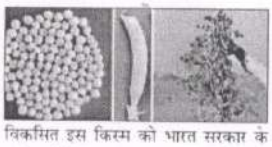

विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों को इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि इससे पूर्व विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा दाना मटर की अपर्णा, जयंती, उत्तरा, एच.एफ.पी.-9426, हरियल, एच.एफ.पी.-529 व एच.एफ.पी.-715 किस्में विकसित की जा चुकी हैं।

कम अवधि में पककर तैयार होती है किस्म

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि रबी में सिंचित क्षेत्रों में काश्त की जाने वाली दाना मटर की इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी फसल कम अवधि (लगभग 123 दिन) में पककर तैयार हो जाती है। यह हरे पत्रक एवं सफ़ेद फूलों वाली बौनी किस्म है व इसके दाने पीले-सफेद (क्रीम) रंग के मध्यम आकार व घोड़ी झुर्रियों एवं हल्के बेलनाकार होते हैं। इसके पौधे सीधे बढ़ने वाले होते हैं इसलिए फलियां लगने के बाद गिरते नहीं हैं, जिससे इसकी उत्पादकता नहीं घटती एवं कटाई भी आसान हो जाती है। इस किस्म की एक और खासियत यह है की इसकी जड़ों में नत्रजन स्थापित करने वाली गाठें और नाइट्रोजीनेस गतिविधि बहुत अधिक होती है जिसके कारण इसकी पर्यावरण से नत्रजन स्थापित करने की क्षमता अत्यधिक है जोकि इसके उपरांत ली जाने वाली फसलों के लिए भी लाभदायक है। इसकी औसत पैदावार 26-28 क्विंटल प्रति हेक्टेयर एवं अधिकतम पैदावार 40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक आंकी गई है।

उत्तर-पश्चिम भारत के मैदानी इलाकों के लिए की गई है विकसित

रबी में बोई जाने वाली दाना मटर की एच.एफ.पी.-1428 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के सिंचित क्षेत्रों में काश्त के लिए अनुमोदित किया गया है जिसमे जम्मू और कश्मीर के मैदानी भाग, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड राज्य शामिल हैं।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

दाना मटर की एच.एफ.पी.-1428 किस्म विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के कृषि वैज्ञानिक डॉ. राजेश यादव के नेतृत्व में, डॉ. रविका, डॉ. नरेश कुमार और डॉ. ए.के. छाबड़ा द्वारा विकसित की गई है। इस उपलब्धि को प्राप्त करने में डॉ. रामधन जाट, डॉ. तरुण वर्मा एवं डॉ. प्रोमिल कपूर का भी विशेष योगदान रहा है।

रोगरोधक क्षमता अधिक

यह किस्म सफ़ेद चूर्णी, एस्कोकायटा ब्लाइट व जड़ गलन जैसे रोगों की प्रतिरोधी है एवं इसमें रतुआ का प्रकोप भी कम होता है। इसके अतिरिक्त दाना मटर की इस किस्म में एफिड जैसे रस चूसक कीट एवं फली छेदक कीटों का प्रभाव भी पहले वाली किस्मों की तुलना में बहुत कम होगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पाँच बजे.....

दिनांक 22.12.2022...पृष्ठ संख्या.....1.....कॉलम.....1.....

मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर में प्रशिक्षण आयोजित

मशरूम से कम लागत में अधिक मुनाफा हासिल करने के बताए टिप्स

पांच बजे ब्यूज़

हिसार। किसान खेती के साथ-साथ कम लागत से मशरूम का उत्पादन कर सकते हैं और अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। इसके लिए उन्हें मशरूम उत्पादन से संबंधित तकनीकी ज्ञान हासिल करना अनिवार्य है।

ये सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सदलपुर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र में आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान वैज्ञानिकों ने किसानों को दी। पांच दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण में आसपास के विभिन्न गांवों के किसानों ने हिस्सा लिया। कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर के को-ऑर्डिनेटर डॉ. नरेंद्र कुमार ने प्रतिभागियों को बताया कि मशरूम को खेती फसल अवशेषों पर की जाती है जिससे उनका पुनः चक्र होकर उच्च कोटि के पोषक तत्वों एवं औषधीय गुणों से भरपूर मशरूम प्राप्त होता है।

उन्होंने बताया कि भारत में श्वेत बटन मशरूम (खुम्ब) की एगेरिकस बाईसपोरस प्रजाति की खेती बड़े पैमाने पर की जा रही है। उत्पादन की दृष्टि से श्वेत बटन मशरूम (खुम्ब) का विश्व में प्रथम स्थान है। देश के मैदानी और पहाड़ी भागों में श्वेत बटन मशरूम (खुम्ब) को शरद ऋतु में उगाया जाता है, क्योंकि इस ऋतु में तापमान कम तथा हवा में नमी अधिक होती है। इंजीनियर अजीत सांगवान ने श्वेत बटन मशरूम (खुम्ब) के उत्पादन के लिए उचित तापमान, जगह व अन्य आवश्यक तत्वों की जानकारी दी। अन्य वैज्ञानिकों ने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में भी विस्तार से बताया। इसके अलावा खुम्ब में होने वाले कीड़े-मकोड़ो व बिमारियों का प्रबंधन, मशरूम का मूल्य संवर्धन व मार्केटिंग इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। डॉ. राकेश चुघ ने मशरूम की खाद बनाने व बिजाई के तरीकों के साथ-साथ पराली से खाद तैयार कर उसमें विभिन्न प्रकार के मशरूम उत्पादन की जानकारी दी गई। उन्होंने खाद व बीज बनाने से संबंधित प्रशिक्षणार्थियों के सवालों के जवाब दिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा मशरूम उत्पादन के लिए तैयार खाद को खरीदकर किसान अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं।

60 प्रशिक्षणार्थियों ने लिया प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर के कोऑर्डिनेटर डॉ. नरेंद्र कुमार ने बताया कि इस पांच दिवसीय अनुसूचित जाति व जनजाति के युवाओं हेतु मशरूम उत्पादन पर व्यवसायिक प्रशिक्षण में हिसार, साहू, बिठमड़ा, प्रभुवाला, नंगथला, किरमारा, सदलपुर, खारा बरवाला, किशनगढ़, आदमपुर, कोहली, मिंगनीखेड़ा, सीमखाल आदि के 60 युवाओं ने भाग लिया। इस दौरान प्रशिक्षणार्थियों को व्यवहारिक ज्ञान देने के लिए तथा किसानों को जागरूक करने के लिए मशरूम उत्पादन प्रदर्शनी तैयार करके दिखाई गई। उन्होंने बताया कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के विभिन्न वैज्ञानिक डॉ. कुशल राज, डॉ. सतीश मेहता, डॉ. राकेश चुघ, डॉ. राकेश सांगवान, डॉ. वीणा सांगवान, डॉ. राकेश पूनिया, डॉ. अनिल सैनी, डॉ. जगदीप मेहता व डॉ. मंजीत के अलावा जिला बागवानी अधिकारी डॉ. सुरेंद्र सिहाग, एचडीओ डॉ. मनमोहन, डॉ. अजीत सांगवान, डॉ. कुंडू, डॉ. ज्योति ने युवाओं को खुंब उत्पादन, लेखा-जोखा, रखरखाव, कीट रोग प्रबंधन, सब्सिडी व बैंक लोन आदि की विस्तृत जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....सिटी पल्स.....

दिनांक 22.12.2022 पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—

मशरूम से कम लागत में अधिक मुनाफा हासिल करने के बताए टिप्स

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। किसान खेती के साथ-साथ कम लागत से मशरूम का उत्पादन कर सकते हैं और अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। इसके लिए उन्हें मशरूम उत्पादन से संबंधित तकनीकी ज्ञान हासिल करना अनिवार्य है। ये सलाह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सदलपुर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र में आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान वैज्ञानिकों ने किसानों को दी। पांच दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण में आसपास के विभिन्न गांवों के किसानों ने हिस्सा लिया। कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर के को-ऑर्डिनेटर डॉ. नरेंद्र कुमार ने प्रतिभागियों को बताया कि मशरूम की खेती फसल अवशेषों पर की जाती है जिससे उनका पुनः चक्र होकर उच्च कोटि के पोषक तत्वों एवं औषधीय गुणों से भरपूर मशरूम प्राप्त होता है। उन्होंने बताया कि भारत में श्वेत बटन मशरूम (खुम्ब) की एगेरिकस बाईसपोरस प्रजाति की खेती बड़े पैमाने पर की जा रही है। पांच दिवसीय अनुसूचित जाति व जनजाति के युवाओं हेतु मशरूम उत्पादन पर व्यवसायिक प्रशिक्षण में 60 युवाओं ने भाग लिया। वैज्ञानिक डॉ. कुशल राज, डॉ. सतीश मेहता, डॉ. राकेश चुघ, डॉ. राकेश सांगवान, डॉ. वीणा सांगवान, डॉ. राकेश पूनियां, डॉ. अनिल सैनी, डॉ. जगदीप मेहता व डॉ. मंजीत के अलावा जिला बागवानी अधिकारी डॉ. सुरेंद्र सिहाग, एचडीओ डॉ. मनमोहन, डॉ. अजीत सांगवान, डॉ. कुंडू, डॉ. ज्योति ने युवाओं को जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....हरियाणा पत्रिका.....

दिनांक 22.12.2022.....पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

मशरूम से कम लागत में अधिक मुनाफा हासिल करने के बताए टिप्स

पराली से भी खाद तैयार कर मशरूम उत्पादन कर सकते हैं किसान

मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर में प्रशिक्षण आयोजित

वाटिका@हिसार। किसान खेती के साथ-साथ कम लागत से मशरूम का उत्पादन कर सकते हैं और अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। इसके लिए उन्हें मशरूम उत्पादन से संबंधित तकनीकी ज्ञान हासिल करना अनिवार्य है। ये सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सदलपुर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र में आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान वैज्ञानिकों ने किसानों को दी। पांच दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण में आसपास के विभिन्न गांवों के किसानों ने हिस्सा लिया।

कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर के को-ऑर्डिनेटर डॉ. नरेंद्र कुमार ने प्रतिभागियों को बताया कि मशरूम की खेती फसल अवशेषों पर की जाती है जिससे उनका पुनः चक्र होकर उच्च कोटि के पोषक तत्वों एवं औषधीय गुणों से भरपूर मशरूम प्राप्त होता है। उन्होंने बताया कि भारत में श्वेत बटन मशरूम (खुम्ब) की एगेरिकस बाईसपोरस प्रजाति की खेती बड़े पैमाने पर की जा रही है। उत्पादन की दृष्टि से श्वेत बटन मशरूम (खुम्ब) का विश्व में प्रथम स्थान है। देश के मैदानी और पहाड़ी भागों में श्वेत बटन मशरूम (खुम्ब)को शरद ऋतु में उगाया जाता है, क्योंकि इस ऋतु में तापमान कम तथा हवा में नमी अधिक होती है। इंजीनियर अजीत सांगवान ने श्वेत बटन मशरूम (खुम्ब) के उत्पादन के लिए उचित तापमान, जगह व अन्य आवश्यक तत्वों की जानकारी दी। अन्य वैज्ञानिकों ने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में भी विस्तार से बताया। इसके अलावा खुम्ब में होने वाले कीड़े-मकोड़ो व बिमारियों का प्रबंधन, मशरूम का मूल्य संवर्धन व मार्केटिंग इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। डॉ. राकेश चुघ ने मशरूम की खाद बनाने व बिजाई के तरीकों के साथ-साथ पराली से खाद तैयार कर उसमें विभिन्न प्रकार के मशरूम उत्पादन की जानकारी दी गई। उन्होंने खाद व बीज बनाने से संबंधित प्रशिक्षणार्थियों के सवालों के जवाब दिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा मशरूम उत्पादन के लिए तैयार खाद को खरीदकर किसान अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम......समस्त हरियाणा......

दिनांक 22.12.2020 पृष्ठ संख्या...... — ......कॉलम...... — ......

मशरूम से कम लागत में अधिक मुनाफा हासिल करने के दिए टिप्स

पराली से खाद तैयार कर मशरूम उत्पादन कर सकते हैं किसान

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। किसान खेती के साथ-साथ कम लागत से मशरूम का उत्पादन कर सकते हैं और अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। इसके लिए उन्हें मशरूम उत्पादन से संबंधित तकनीकी ज्ञान हासिल करना अनिवार्य है। ये सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सदलपुर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र में आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान वैज्ञानिकों ने किसानों को दी।

पांच दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण में आसपास के विभिन्न गांवों के किसानों ने हिस्सा लिया। कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर के को-ऑर्डिनेटर डॉ. नरेंद्र कुमार ने प्रतिभागियों को बताया कि मशरूम की खेती फसल अवशेषों पर की जाती है जिससे उनका पुनः चक्र होकर उच्च कोटि के पोषक तत्वों एवं औषधीय गुणों से भरपूर मशरूम प्राप्त होता है। उन्होंने बताया कि भारत में श्वेत बटन मशरूम (खुम्ब) की एगेरिकस बाईसपोरस प्रजाति की खेती बड़े पैमाने पर की जा रही है। उत्पादन की दृष्टि से श्वेत बटन मशरूम (खुम्ब) का विश्व में प्रथम स्थान है। देश के मैदानी और पहाड़ी भागों में श्वेत बटन मशरूम (खुम्ब)को शरद ऋतु में उगाया जाता है, क्योंकि इस ऋतु में तापमान कम तथा हवा में नमी अधिक होती है। इंजीनियर अजीत सांगवान ने श्वेत बटन मशरूम (खुम्ब) के उत्पादन के लिए उचित तापमान, जगह व अन्य आवश्यक तत्वों की जानकारी दी।

60 प्रशिक्षणार्थियों ने लिया प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर के कोऑर्डिनेटर डॉ. नरेंद्र कुमार ने बताया कि इस पांच दिवसीय अनुसूचित जाति व जनजाति के युवाओं हेतु मशरूम उत्पादन पर व्यवसायिक प्रशिक्षण में हिसार, साहू, बिठमड़ा, प्रभुवाला, नंगथला, किरमारा, सदलपुर, खारा बरवाला, किशनगढ़, आदमपुर, कोहली, मिंगनीखेड़ा, सीसवाल आदि के 60 युवाओं ने भाग लिया। इस दौरान प्रशिक्षणार्थियों को व्यवहारिक ज्ञान देने के लिए तथा किसानों को जागरूक करने के लिए मशरूम उत्पादन प्रदर्शनी तैयार करके दिखाई गई। उन्होंने बताया कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के विभिन्न वैज्ञानिक डॉ. कुशल राज, डॉ. सतीश मेहता, डॉ. राकेश चुघ, डॉ. राकेश सांगवान, डॉ. वीणा सांगवान, डॉ. राकेश पूनियां, डॉ. अनिल सैनी, डॉ. जगदीप मेहता व डॉ. मंजीत के अलावा जिला बागवानी अधिकारी डॉ. सुरेंद्र सिहाग, एचडीओ डॉ. मनमोहन, डॉ. अजीत सांगवान, डॉ. कुंडू, डॉ. ज्योति ने युवाओं को खुंब उत्पादन, लेखा-जोखा, रखरखाव, कीट रोग प्रबंधन, सब्सिडी व बैंक लोन आदि की विस्तृत जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....अजीत समाचार.....

दिनांक 23.12.2020...पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

मशरूम से कम लागत में अधिक मुनाफा हासिल करने के बताए टिप्स

हिसार/मंगाली नलवा, 22 दिसम्बर (राज पराशर/देवानन्द सोनी) : किसान खेती के साथ-साथ कम लागत से मशरूम का उत्पादन कर सकते हैं और अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। इसके लिए उन्हें मशरूम उत्पादन से संबंधित तकनीकी ज्ञान हासिल करना अनिवार्य है। यह सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सदलपुर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र में आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान वैज्ञानिकों ने किसानों को दी। पांच दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण में आसपास के विभिन्न गांवों के किसानों ने हिस्सा लिया। कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर के को-ऑर्डिनेटर डॉ. नरेंद्र कुमार ने प्रतिभागियों को बताया कि मशरूम की खेती फसल अवशेषों पर की जाती है जिससे उनका पुन: चक्र होकर उच्च कोटि के पोषक तत्वों एवं औषधीय गुणों से भरपूर मशरूम प्राप्त होता है। उन्होंने बताया कि भारत में श्वेत बटन मशरूम (खुम्ब) की एगेरिकस बाईसपोरस प्रजाति की खेती बड़े पैमाने पर की जा रही है। उत्पादन की दृष्टि से श्वेत बटन मशरूम (खुम्ब) का विश्व में प्रथम स्थान है। देश के मैदानी और पहाड़ी भागों में श्वेत बटन मशरूम (खुम्ब)को शरद ऋतु में उगाया जाता है, क्योंकि इस ऋतु में तापमान कम तथा हवा में नमी अधिक होती है। इंजीनियर अजीत सांगवान ने श्वेत बटन मशरूम (खुम्ब) के उत्पादन के लिए उचित तापमान, जगह व अन्य आवश्यक तत्वों की जानकारी दी।

60 प्रशिक्षणार्थियों ने लिया प्रशिक्षण : कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर के कोऑर्डिनेटर डॉ. नरेंद्र कुमार ने बताया कि इस पांच दिवसीय अनुसूचित जाति व जनजाति के युवाओं हेतु मशरूम उत्पादन पर व्यवसायिक प्रशिक्षण में हिसार, साहू, बिठमड़ा, प्रभुवाला, नंगथला, किरमारा, सदलपुर, खारा बरवाला, किशनगढ़, आदमपुर, कोहली, मिंगनीखेड़ा, सीसवाल आदि के 60 युवाओं ने भाग लिया। इस दौरान प्रशिक्षणार्थियों को व्यवहारिक ज्ञान देने के लिए तथा किसानों को जागरूक करने के लिए मशरूम उत्पादन प्रदर्शनी तैयार करके दिखाई गई। उन्होंने बताया कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के विभिन्न वैज्ञानिक डॉ. कुशल राज, डॉ. सतीश मेहता, डॉ. राकेश चुघ, डॉ. राकेश सांगवान, डॉ. वीणा सांगवान, डॉ. राकेश पूनियां, डॉ. अनिल सैनी, डॉ. जगदीप मेहता व डॉ. मंजीत के अलावा जिला बागवानी अधिकारी डॉ. सुरेंद्र सिहाग, एचडीओ डॉ. मनमोहन, डॉ. अजीत सांगवान, डॉ. कुंडू, डॉ. ज्योति ने युवाओं को खुंब उत्पादन, लेखा-जोखा, रखरखाव, कीट रोग प्रबंधन, सब्सिडी व बैंक लोन आदि की विस्तृत जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....अमर उजाला.....

दिनांक 23.12.2020..पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....4-5.....

चार साल बाद होंगे हौंटिया के चुनाव, 1634 कर्मचारी करेंगे मतदान

पिछली बार सर्वसम्मति से चुनी गई थी पूर्व कार्यकारिणी, हुआ था विवाद

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में चार वर्ष बाद गैर-शिक्षक कर्मचारी संघ (हौंटिया) के चुनाव होंगे। चुनाव के लिए तैयारियां शुरू हो गई हैं और फार्म मैनेजर डॉ. महेंद्र सिंह मोर को इसके लिए चुनाव अधिकारी नियुक्त किया गया है।

नई कार्यकारिणी का चुनाव दो वर्ष का होगा और इसमें 7 पदाधिकारियों को चुना जाएगा। पूर्व कार्यकारिणी भंग करने के बाद अब नए चुनावों के लिए जल्द ही तारीख का एलान होगा। संभवतः जनवरी के पहले सप्ताह में चुनाव हो सकते हैं। बता दें कि इससे पहले वर्ष 2016 में चुनाव हुए थे। इसके बाद 2018 में राजबीर सिंह प्रधान एवं उनकी पूरी कार्यकारिणी को सर्वसम्मति से प्रधान बनाया गया। हालांकि चुनाव न करवाए जाने का आरोप लगाते हुए इस मामले में काफी बवाल हुआ था।

प्रधान सहित 7 पदों के लिए होगा चुनाव

कर्मचारी संघ के चुनाव में कार्यकारिणी के 7 पदों के लिए चुनाव होगा। इसमें प्रधान, उपप्रधान, महासचिव, संयुक्त सचिव, कोषाध्यक्ष और दो सदस्य शामिल हैं। संघ के संविधान में प्रधान को यह शक्तियां भी दी गई हैं कि वह चुनावों के बाद 10 नामिनी चुन सकता है। इस बार एचएयू के गैर शिक्षक कर्मचारी संघ का पंजीकरण भी करवाया गया है।

चार पैनल होंगे मैदान में : एचएयू में कर्मचारी की संख्या अन्य विश्वविद्यालयों की अपेक्षा अधिक होती है। इसलिए यहां का चुनाव अधिक रोमांचक होता है। इस बार चुनाव में चार पैनल आमने-सामने होने की संभावना है। विवि में 1634 स्थायी कर्मचारी हैं, जबकि कुल कर्मचारियों की बात करें तो इनकी संख्या साढ़े 3 हजार से भी अधिक है। विवि कैंपस के अलावा प्रदेशभर में खोले गए कृषि विज्ञान केंद्रों के कर्मचारी भी इसमें शामिल हैं। एचएयू के चुनाव दो दिनों में होंगे। एक दिन विवि कैंपस में और एक दिन कृषि विज्ञान केंद्रों में चुनाव करवाए जाते हैं।